International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 8; August 2017; Page No. 292-293

दो पाटों के बिच आपका बंटी

डॉ. नीना शर्मा
का.आचार्या, हिन्दी विभाग,आणंद आर्ट्स कोलेज,आणंद, गुजरात, भारत

प्रस्तावना

समकालीन महिला कथाकारों में मन्नू भन्डारी का स्थान प्रमुख है | उनका जन्म ३ अप्रेल १९३१ में मध्यप्रदेश के भानपुरा में हुआ था | मन्नू भन्डारी अपने के पिता श्री सुख सम्पति राय अपनी बेटी से बहुत प्यार करते थे | वह उनकी सबसे छोटी बेटी थी अपने पिता से लेखन की कला उन्हें संस्कार में मिली थी | मन्नू भन्डारी का विवाह हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र यादव से हुआ | ओर ऐसा साथ पाकर उनका लेखन और अधिक धारदार हो गया | मन्नू भन्डारी अपनी कथा यात्रा में समाज के वर्गों को व्याख्याइत करने का प्रयास किया | साहित्य में उनकी विशिष्ट पहचान है | उनके कई कहानी संग्रह प्रकाशित है "में हार गई", "तीन निगाहों की एक तस्वीर", "आँखों देखा झुंट", "एक प्लेट सैलाब", "यही सच है", "त्रिशंकु", "एक पुरुष एक नारी" आदि | मन्नू भंडारी की कई कहानियों का कई भाषाओ में अनुवाद भी हुआ है |

मन्नू भन्डारी ने उपन्यासों की भी रचना की है | स्वामी, कलवा, एक इंच मुस्कान, आपका बंटी, महाभोज आदि प्रमुख है | मन्नू भन्डारी की महत्वपूर्ण उपन्यास "आपका बंटी" है | यह उपन्यास दो स्तरों पर होता है जिसमें एक तरफ बाल मानस की समस्या है तो दूसरी तरफ एक स्त्री के अस्तित्व की कथा भी है | उपन्यास के प्रारंभ में ही पता चलता है कि शकुन अपने बेटे बंटी के साथ अलग रहती है | शकुन कोलेज में अध्यापिका है साथ ही गर्ल्स हॉस्टल की रेक्टर भी है | बंटी अपनी माँ से बहुत प्यार करता है | लेकिन बह अपने पिता से भी प्यार करता है | वह चाहता है कि उसके माता पिता दोनों एक साथ रहे | लेकिन अपने मित्र टीटू से पता चलता है कि उसके मम्मी पापा का तलाक हो गया है और उसे पता चलता है इसका मतलब पक्की वाली कुट्टी है | लेकिन वह अपनी कोशिश में लगा रहता है लेकिन दूसरी तरफ शकुन और अजय अपने अपने अहं में अपने बेटे को ही भूल जाते है और अलग हो जाते है | अजय कलकत्ता में अपनी अलग दुनिया मीरा के साथ शुरु करता है तो शकुन भी डॉक्टर जोशी के साथ अपना रास्ता बदल लेती है लेकिन बंटी डॉक्टर जोशी में अजय को ढूंढता है और असफल रहता है क्योंकि डॉक्टर जोशी के बच्चे उसे अपनी मम्मी के प्यार में साझेदार लगते है और वह अपनी मम्मी को बाँटना नहीं चाहता और किसी न किसी प्रकार अपने माँ से दूर होता चला जाता है और अंततः वह निर्णय लेता है कि वह अपने पिता अजय के पास जाकर अपनी माँ को दुःख पहुँचायेगा | और वह अपने पिता अजय के साथ चला जाता है लेकिन मीरा के साथ अपना तालमेल नहीं बिठा पाता और अजय उसे हॉस्टल भेजने का निर्णय करता है | "शकुन और अजय पति पत्नि है | दोनों में अहं का भाव प्रखर मात्रा में है | अतः दाम्पत्य संबंधो की टकराहट हर रोज की बात बं जाति है | इससे पति पत्नि निरंतर घुटन तनाव से त्रास के शिकार बने रहते है | उनके जीवन में न स्थिरता है न शांति है और ना ही वे एक दुसरे के अहं को हिन् होने देते है | अपने अहं की हत्या दोनों को भी मंजूर नहीं है |"१

मन्नू भन्डारी के साहित्य को एक नई सोच दी जहाँ एक बच्चे की पिढा को व्यक्त किया गया | परिवार टूटने से सबसे ज्यादा पिढा बच्चे को भोगनी पड़ती है | वह मानसिक रूप से पूरी तरह टूट जाता है | अपने माता पिता के मन मुटाव को वह समझ ही नहीं पाता उसके लिए दोनों हीआवश्कयता है | "पति पत्नि दोनों भी अपने अपने अहं के दरिया में बहते जाते है और परिणामतः उनमे पहले संबंध विच्छेद और बाद में विवाह विच्छेद हो जाता है | लेकिन उनकी एक लोती संतान बंटी पर इसका भारी असर पड़ता है | पापा की पत्नि (दूसरी) और मम्मी के पति (दुसरे) के साथ एडजस्ट नहीं कर पाता है |"२ और यही से बंटी की व्यथा की कथा आरंभ होती है | पारिवारिक विघटन की स्थितियों में कई कारण रहे है | जिसके कारण परिवार टूटते रहे | आज के समाज में विचारो की स्वंतंत्रता परिवार को कही न कही दरका देती है | यह आवश्यक नहीं की पुरुष के प्रत्येक निर्णय में स्त्री का सर झुकाना आवश्यक है उसका अपना व्यक्तित्व एवं उसकी अपनी पहचान है | यही पहचान उसे स्वछंदता के आरोप से मढ़ देती है | संतुलन समझोता और समझदारी परिवारों को टूटने से बचा सकती है लेकिन यह दोनों तरफ से होना अनिवार्य है | "जो परिवार परिवर्तनों के साथ सामजस्य स्थापित करने में सफल हो जाते है वे ही संगठित रह जाते है और जो परिवार सामजस्य में पिछड़ जाते है वहाँ तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है |"३ शकुन और अजय भी सामजस्य नहीं बिठा पाते और अलग हो जाते है | अजय अपने परिवार को लेकर उतना संजिदा नहीं है | जितना की शकुन है शकुन का प्रत्येक काम बंटी के आसपास रहता है | जब अजय मीरा से विवाह करता है तब उसका मन टूट कर रह जाता है | वह अपने परिवार को बांधना चाहती है लेकिन संबंधो के धागे इतने उलझ गये है कि वह चाहकर भी उसे सुलझा नहीं पाती | धीरे धीरे बंटी भी उससे दूर होने लगता है | उसे समझ नहीं आता कि वह क्या करे बंटी को लगता है कि उसकी मम्मी उससे ज्यादा डॉ.जोशी के अधिक निकट है जब अजय से शकुन अलग होती है तो उसे वह सहन नहीं कर पाती "अब होने को बाकी ही क्या रह गया था *?* बस अब से तू मेरा बेटा है केवल मेरा भूल जा कि तेरे पापा.... | और माँ का स्तर भिंच गया |"४ बंटी अपनी माँ को जब डॉ.जोशी के साथ देखता है तो उसकी मानसिक स्थिति खराब होने लगती है | और एक मासूम सा बच्चा कितनी ही कुंठाओ में घिर जाता है | और नगर के जीवन में टूटते परिवार की स्थितियों को आपका बंटी उपन्यास में देखा जा सकता है | यह उपन्यास "समकालीन नागरीय परिवेश में स्त्री पुरुष के खंडित दाम्पत्य के कारण बच्चो की जो दयनीय स्थिति निर्मित होती है | उस पर उपन्यास सीधा दृष्टि पात करता है |"५ बंटी को जब लगने लगता है कि अब वह इस घर में नहीं रह सकता तो वह निर्णय करता वह इस घर में घुटन का अनुभव करने लगता है | डॉ.जोशी उसके पापा की जगह नहीं ले सके यह घर भी उसे अपना नहीं लगता है | और इन सबके पीछे वह अपनी माँ को दोषी मानने लगता है | और अजय के पास जाने का निर्णय कर लेता है | वह ऐसा कुछ करना चाहता था जिससे उसकी माँ को दुःख पहुँचे | "वह पापा के पास से आया है इसलिए मम्मी नाराज है, दुखी है | अच्छा है हो नाराज हो, दुखी, अभी क्या है अभी तो वह यही घूमने गया था जब उनके साथ कलकत्ता चला जाएगा तब पता लगेगा | अब कहकर तो देखे उससे कि मत जा तब वह बताएगा | पर मम्मी ने कुछ भी नहीं कहा |"६ बंटी को लेखिका ने बड़ी बारीकी से चित्रित किया है | बंटी का पूरा परिवर्तन डॉ.जोशी के उसकी मम्मी के जीवन में आने के बाद होता है | उसे लगता है कि माँ भी बदल गयी है | मन्नू भन्डारी का

यह उपन्यास उस बच्चो की मानसिकता को उजागर करता है जो अपने ही परिवार के कारण दुखी हो गया है | अजय और शकुन अपनी अपनी परेशानियों में ही उलझे है लेकिन इस उलझन में उनका बेटा बंटी दोनों ही से दूर हो गया इसका उन्हें पता ही नहीं चला | दोनों की टकराहट बंटी को अकेला कर देती है | मन्नू भन्डारी स्वयं कहती है कि "गलत और सही अगर कोई हो सकते है तो वे अजय शकुन और बंटी के आपसी संबंध | इस पूरी स्थिति की सबसे बड़ी विडंबना ही यह है कि इन संबंधो के लिए सबसे कम जिम्मेदार और सब ओर से बेगुनाह बंटी ही इस ट्रेजडी के त्रास को सबसे अधिक भोगता है | शकुन अजय के संबंधो का तनाव और चटख बंटी की नस-नस में है | प्रतिध्वनित होती है |"७ नगर के जीवन में टूटते परिवारों की कथा है | जहाँ तलाक एक सामान्य बात बन कर रह गयी है | बच्चो की स्थिति ज्यादा भयानक होती है | इस उपन्यास में यदि शकुन के पक्ष को देखा जाये तो वह इतनी दोषी नहीं है | अजय से तलाक के समय वह इस स्थिति में अपने परिवार को नहीं चाहती थी | डॉ.जोशी विवाह करने के बाद बंटी के व्यवहार देखकर एक बार उसे भी लगने लगता है कि कही उसने यह विवाह करके गलती तो नहीं कर दि | लेकिन सत्य यह भी है कि उसका अपना भी एक अलग स्वतंत्र अस्तित्व है अपनी पहचान है | लोगो ने यह शकुन का अहं माना है लेकिन क्या एक स्त्री को अपने बारे में सोचने का अधिकार नहीं है ? अपनी दो दो भूमिकाओं का निर्वाह करती है | जब माँ बनने की कोशिश करती तो पत्नि नहीं रह जाती और जब पत्नि बनने की चेष्ठा करती है तो माँ के बारे में नहीं सोच पाती है और वह स्वयं भी इस परिस्थिति में अपने आप को दो पाटो के मध्य पिसा हुआ समझती है | बंटी के जाते समय उसकी स्थिति बड़ी करुण दिखाई देती है | "एकाएक ही बंटी का टुकुर टुकुर देखता हुआ चेहरा आँखों के सामने उभर आया बिना बोले मुँह फेरे फेरे ही मानो कह रहा हो | मुझे रोक लो मम्मी मुझे रोक लो और फिर तो जैसे हजार हजार चेहरे उसके आगे पीछे घुमने लगे |"८ दो पार्टी के बिच झूलती शकुन अपने प्रत्येक निर्णय के बाद यही सोचती है कि कही उससे गलती तो नहीं हो गयी है | फूफी भी वाही चाहती थी कि शकुन दूसरा विवाह करे क्योंकि उसे बंटी की चिंता थी | लेकिन शकुन अजय को निचा दिखाना चाहती थी | मन्नू भन्डारी को लगता है कि यदि माता पिता के विचारो में मतभेद है और यदि वह अलग हो जाते है तो इसकी सजा उनके बच्चे क्यों भुगते | क्योंकि इस सजा के रूप में बच्चे जीवन भर का संत्रास भुगतते है | " इस उपन्यास की प्रमुख विशेषता यह है कि एक तरफ यह आज की नारी की वेदना को बड़ी मार्मिकता से रूपायित करता है दूसरी तरफ आधुनिक जीवन संदर्भो की कृतिमता और खोखलापन को बड़ी सूक्ष्मता से उजागर किया गया है | विपरीत परिस्थितियों में या चाहते हुए भी यतार्थता से अपना सामंजस्य स्थापित कर पाने के कारण कितनी मानसिक यंत्रनाओं से व्यक्तिओ को गुजरना पड़ता है | इसे बड़ी कुशलता से चित्रित किया गया है |"९

संदर्भ

1. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में परिवर्तन –नारी जीवन मूल्य –डॉ.छायादेवी घोरपड़े-पेज.नं.२६३
2. वही- पेज.नं-२६३
3. महिला उपन्यासकार पारिवारिक जीवन के बदलते संदर्भ-डॉ.कल्पना किरण पाटोले- पेज.नं-१६१
4. आपका बंटी-मन्नू भन्डारी- पेज.नं-६५
5. आधुनिक लेखिकाओं के परिवेश के नगरीय उपन्यास-डॉ.पारुकांत देसाई-पेज.नं-२९
6. आपका बंटी-मन्नू भन्डारी- पेज.नं-१६०
7. वही- पेज.नं-५
8. वही- पेज.नं-१८०
9. मन्नू भन्डारी के उपन्यास का विश्लेषणात्मक अध्ययन –पेज.नं.- ४१